रिसाला नम्बर : 128

Zinda Beti Kuen Mein Phenk Di (Hindi)

ज़िन्दा बेटी कूंएं में फेंक दी

(बेटी के फ़ज़ाइल मअ़ 40 रूहानी इलाज)

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी र-ज़वी دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (اَلْمُسْتَطْرَف ج١ ص٤٠ دارالفكر بيروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

ज़िन्दा बेटी कूंएं में फेंक दी

येह रिसाला (**ज़िन्दा बेटी कूंएं में फेंक दी**)

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई-मेइल या SMS) मुत्तलअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद
के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात

MO. 9374031409 E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

ज़िन्दा बेटी कूंएं में फेंक दी

शैतान लाख सुस्ती दिलाए येह रिसाला (32 सफ़हात) मुकम्मल पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ आप अपने दिल में बेटियों से महब्बत बढ़ती हुई महसूस फ़रमाएंगे ।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना, साहिबे मुअत्तर पसीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आफ़िय्यत निशान है **:** ऐ लोगो ! बेशक बरोज़े क़ियामत इस की दहशतों और हिसाब किताब से जल्द नजात पाने वाला शख़्स वोह होगा जिस ने तुम में से मुझ पर दुन्या के अन्दर ब कसरत दुरूद शरीफ़ पढ़े होंगे । **(اَلْفِردَوس ج٥ ص٣٧٥ حديث ٨٢١٠)**

﴾1﴿ ज़िन्दा बेटी कूंएं में फेंक दी

एक शख़्स ने बारगाहे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की **: या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! हम ज़मानए जाहिलिय्यत में बुत परस्त थे अपनी औलाद को मार डालते थे, मेरी एक **बेटी** थी, जब मैं उसे बुलाता तो खु़श होती थी । एक दिन मैं ने उसे बुलाया तो खु़शी खु़शी मेरे पीछे चलने लगी, हम नज़्दीक ही एक **कूंएं** पर पहुंचे, **मैं ने उस का हाथ पकड़ा और कूंएं में फेंक दिया !** (बेचारी रो रो कर) अब्बूजान ! अब्बूजान ! चिल्लाती रह गई (और मैं वहां से चल

www.dawateislami.net

दिया।) (येह सुन कर) रह़मते आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की चश्माने करम (या'नी मुबारक आंखों) से आंसू जारी हो गए। फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''इस्लाम ज़मानए जाहिलिय्यत में होने वाले गुनाहों को मिटा देता है।'' (سُنَنِ دارمی ج١ ص١٤ حديث٢ مُلَخَّصاً)

﴿2﴾ अब्बू ! क्या आप मुझे क़त्ल करने लगे हैं ?

एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं जब से मुसल्मान हुवा हूं मुझे इस्लाम की ह़लावत या'नी मिठास नसीब नहीं हुई, ज़मानए जाहिलिय्यत में मेरी एक **बेटी** थी, मैं ने अपनी बीवी को हुक्म दिया कि इसे (उ़म्दा लिबास वग़ैरा से) आरास्ता करे, फिर मैं उसे साथ ले कर घर से चला, एक गहरे गढ़े के पास पहुंच कर उसे अन्दर फेंकने लगा तो उस ने (बे क़रारी के साथ रोते हुए) कहा : يَا اَبَتِ قَتَلْتَنِىْ؟ या'नी **अब्बू ! क्या आप मुझे क़त्ल करने लगे हैं ?** मगर मैं ने (उस के रोने धोने, चीख़ने चिल्लाने की परवा किये बिग़ैर) उसे उस गहरे गढ़े में फेंक दिया ! **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! जब अपनी बेटी का येह जुम्ला (अब्बू ! क्या आप मुझे क़त्ल करने लगे हैं ?) याद आता है (बेचैन हो जाता हूं) फिर मुझे किसी चीज़ में लुत़्फ़ नहीं आता। हुज़ूर ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''इस्लाम ज़मानए जाहिलिय्यत में होने वाले गुनाहों को मिटा देता है जब कि इस्लाम की ह़ालत में (या'नी मुसल्मान से) सरज़द होने वाले गुनाहों को इस्तिग़्फ़ार मिटाता है।''

(تفسیر کبیر ج٧ ص٢٢٥ مُلَخَّصاً)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ''इस्तिग़्फ़ार'' का मा'ना मग़्फ़िरत की दुआ़ करना है और दुआ़ए मग़्फ़िरत सग़ीरा व कबीरा दोनों क़िस्म के गुनाहों के लिये की जाती है, लिहाज़ा **अल्लाह तआ़ला** चाहे तो अपनी

www.dawateislami.net

रह़मत से येह दुआ़ क़बूल फ़रमा कर छोटे बड़े सब गुनाह मुआ़फ़ फ़रमा दे । अलबत्ता आ़म आ'माल के मु-तअ़ल्लिक़ मुह़द्दिसीने किराम व उ़-लमाए उ़ज़्ज़ाम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने इस मस्अले की सराह़त फ़रमाई है कि कबीरा गुनाह सिर्फ़ तौबा से मुआ़फ़ होते हैं और दीगर आ'माल में जहां गुनाहों की मुआ़फ़ी की बिशारत हो वहां सिर्फ़ सग़ीरा गुनाहों की मुआ़फ़ी मुराद होती है ।

﴾3﴿ आठ बेटियों को ज़िन्दा दरगोर किया !

ह़ज़रते सय्यिदुना क़ैस बिन आ़सिम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की : मैं ने ज़मानए जाहिलिय्यत में अपनी **आठ बेटियों** को ज़िन्दा दरगोर (या'नी ज़िन्दा दफ़्न) किया है । मह़बूबे रब्बुल इ़बाद صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''हर एक के बदले एक ग़ुलाम आज़ाद करो ।'' अ़र्ज़ की : मेरे पास ऊंट हैं । आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : चाहो तो हर एक की त़रफ़ से एक ब-दना नह़र (या'नी ऊंट की क़ुरबानी) कर दो । (کَنْزُ الْعُمّال ج۲ص۲۳۱حدیث۳۶۸۷)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

पांच लरज़ा ख़ैज़ वारिदातें

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप ने ''बेटी'' को ज़िन्दा दफ़्न कर देने के तअ़ल्लुक़ से दौरे जहालत की झल्कियां मुला-ह़ज़ा कीं । अफ़्सोस ! एक बार फिर बा'ज़ लोग इस्लामी ता'लीमात भुला देने के बाइ़स **बेटी** की विलादत को बुरा समझने और बे रह़मी का मुज़ा-हरा करने लगे हैं । जिस की बिना पर आए दिन क़त्लो ग़ारत गरी की वारिदातें हो रही हैं, नेट पर दी हुई **5 लरज़ा ख़ैज़ वारिदातें** बित्तसर्रुफ़ पेश की जाती हैं : ﴾1﴿ مَعَاذَاللہ ज़मानए जाहिलिय्यत की याद ताज़ा हो गई, छटी

www.dawateislami.net

बेटी की पैदाइश पर ज़ालिम बाप ने 10 दिन की बच्ची को पानी के टब में डुबो कर मार डाला, एह्तिजाज पर बीवी को भी सोते में फ़ायरिंग कर के क़त्ल कर दिया, मुल्ज़िम को गिरिफ़्तार कर लिया गया ﴿2﴾ चन्द हफ़्ते पहले एक शख़्स ने बेटी पैदा होने पर बीवी को आग लगा कर मार दिया था ﴿3﴾ जूलाई में बेटी की पैदाइश पर 25 सालह बीवी को शोहर और सुसरालियों ने ज़िन्दा जला दिया था ﴿4﴾ मजाज़ी इश्क़ की बुन्याद पर दोनों में लव मेरेज हो गया। **अल्लाह तआ़ला** ने एक बेटा और दो बेटियां दीं। कुछ अ़र्से बा'द तीसरी बेटी की विलादत हुई, इस पर आग बगूला हो कर बे वुक़ूफ़ शोहर ने बीवी को इस बे दर्दी से मारा कि वोह बेहोश हो गई और अस्पताल पहुंच कर बेचारी ने दम तोड़ दिया। ﴿5﴾ **एक दिन की बच्ची को ज़िन्दा दफ़्न कर दिया :** पंजाब (पाकिस्तान) के एक दीहाती अ़लाक़े में **बे रह्म बाप ने एक दिन की बच्ची को ज़िन्दा दफ़्न कर दिया !** पोलीस ने मुल्ज़िम को गिरिफ़्तार कर लिया। तफ़्सीलात के मुताबिक़ मुल्ज़िम के घर छटी बेटी पैदा हुई थी। ज़ालिम बाप का कहना है कि इस की बेटी बद सूरत थी, उस का चेहरा बिगड़ा हुवा था जिस पर इस ने डॉक्टर से बच्ची को ज़हरीला इन्जेक्शन लगाने को कहा, डॉक्टर के इन्कार पर उस ने बच्ची को ज़िन्दा दफ़्न कर दिया।

(रोज़नामा जंग ऑन लाइन 14 जूलाई 2012 बित्तसर्रुफ़)

ज़िन्दा बच्ची प्रेशर कूकर में डाल कर चूल्हे पर चढ़ा दी और....

कश्मीर के किसी अ़लाक़े में एक शख़्स की 5 बच्चियां थीं और छटी बार विलादत होने वाली थी। उस ने एक दिन अपनी बीवी से कहा कि अगर अब की बार भी तूने बच्ची जनी तो मैं तुझे नौ मौलूद बच्ची समेत क़त्ल कर दूंगा। हिजरी सिन 1426 के **र-मज़ानुल मुबारक** की

तीसरी शब (8-10-2005) फिर बच्ची ही की विलादत हुई । सुब्ह़ के वक़्त बच्ची की मां की चीख़ो पुकार की परवा किये बिग़ैर उस बे रह़्म बाप ने (مَعَاذَاللّٰہِ عَزَّوَجَلَّ) अपनी फूल जैसी ज़िन्दा बच्ची को उठा कर प्रेशर कूकर में डाल कर चूल्हे पर चढ़ा दिया ! यकायक प्रेशर कूकर फटा और साथ ही **ख़ौफ़नाक ज़ल्ज़ला** आ गया, देखते ही देखते वोह ज़ालिम शख़्स ज़मीन के अन्दर धंस गया । बच्ची की मां को ज़ख़्मी ह़ालत में बचा लिया गया और ग़ालिबन इसी के ज़रीए इस दर्दनाक क़िस्से का इन्किशाफ़ हुवा । इस ज़ल्ज़ले में एक इत्तिलाअ़ के मुत़ाबिक़ **दो लाख से ज़ाइद** अफ़राद फ़ौत हुए ।

अल्लाह चाहे तो बेटा दे या बेटी या कुछ न दे

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस्लाम ने **बेटी** को अ़-ज़मत बख़्शी और इस का वक़ार बुलन्द किया है, मुसल्मान **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का आ़जिज़ बन्दा और उस के अह़काम का पाबन्द होता है, **बेटा** मिले या **बेटी** या **बे औलाद** रहे हर ह़ाल में इसे राज़ी ब रिज़ा रहना चाहिये । पारह 25 **सू-रतुश्शूरा** की आयत 49 और 50 में इर्शाद होता है :

لِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ؕ يَهَبُ لِمَنْ يَّشَآءُ اِنَاثًا وَّيَهَبُ لِمَنْ يَّشَآءُ الذُّكُوْرَ ﴿۴۹﴾ اَوْ يُزَوِّجُهُمْ ذُكْرَانًا وَّاِنَاثًا ۚ وَيَجْعَلُ مَنْ يَّشَآءُ عَقِيْمًا ؕ اِنَّهٗ عَلِيْمٌ قَدِيْرٌ ﴿۵۰﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह ही के लिये है आस्मानों और ज़मीन की सल्त़नत, पैदा करता है जो चाहे, जिसे चाहे बेटियां अ़त़ा फ़रमाए और जिसे चाहे बेटे दे या दोनों मिला दे बेटे और बेटियां और जिसे चाहे बांझ कर दे, बेशक वोह इ़ल्म व क़ुदरत वाला है ।

www.dawateislami.net

बा'ज़ अम्बियाए किराम की औलाद की ता'दाद

''ख़ज़ाइनुल इरफ़ान'' में आयत नम्बर 50 के इस ह़िस्से (जिसे चाहे बांझ कर दे) के तह़्त है : (या'नी) ''कि उस के औलाद ही न हो, वोह (या'नी **अल्लाह तआ़ला**) मालिक है, अपनी ने'मत को जिस त़रह़ चाहे तक़्सीम करे, जिसे जो चाहे दे। अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام में भी येह सब सूरतें पाई जाती हैं, ह़ज़रते लूत़ व ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَيْهِمَاالسَّلَام के सिर्फ़ **बेटियां** थीं, कोई बेटा न था और ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के सिर्फ़ फ़रज़न्द (या'नी बेटे) थे, कोई दुख़्तर (या'नी बेटी) हुई ही नहीं और सय्यिदे अम्बिया ह़बीबे ख़ुदा मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को **अल्लाह तआ़ला** ने चार फ़रज़न्द अ़त़ा फ़रमाए और चार साह़िब ज़ादियां।'' (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 898)

हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुक़द्दस औलाद की ता'दाद

सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के चार फ़रज़न्द होने का अगर्चे ''ख़ज़ाइनुल इरफ़ान'' में ज़िक्र है मगर इस में इख़्तिलाफ़ है, तीन शहज़ादों का भी क़ौल है और दो का भी। चुनान्चे ''तज़्किरतुल अम्बिया'' सफ़ह़ा 827 पर है : आप (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के तीन बेटे थे : **क़ासिम, इब्राहीम, अ़ब्दुल्लाह**। ख़याल रहे कि त़य्यिब, मुत़य्यब, त़ाहिर और मुत़ह्हर इन्हीं (या'नी ह़ज़रते **अ़ब्दुल्लाह** رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه) के अल्क़ाब थे, येह कोई अ़ला-ह़दा बेटे नहीं थे। (तज़्किरतुल अम्बिया, स. 827) ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی **''सीरते मुस्त़फ़ा''** सफ़ह़ा 687 पर लिखते हैं : इस बात पर तमाम मुअर्रिख़ीन का इत्तिफ़ाक़ है कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की औलादे किराम की ता'दाद छ[6] है। दो फ़रज़न्द ह़ज़रते **क़ासिम** व ह़ज़रते **इब्राहीम**

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की । (عبدالرزاق)

(رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) और चार साहिब ज़ादियां ह़ज़रते **ज़ैनब** व ह़ज़रते **रुक़य्या** व ह़ज़रते **उम्मे कुल्सूम** व ह़ज़रते **फ़ातिमा** (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ) लेकिन बा'ज़ मुअर्रिख़ीन ने येह बयान फ़रमाया है कि आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के एक साहिब ज़ादे **अ़ब्दुल्लाह** (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) भी हैं जिन का लक़ब त़य्यिब व त़ाहिर है । इस क़ौल की बिना पर हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की मुक़द्दस औलाद की ता'दाद **सात** है या'नी तीन साहिब ज़ादगान और चार साहिब ज़ादियां । (सीरते मुस्तफ़ा, स. 687)

"ख़वातूने जन्नत" के आठ हुरूफ़ की निस्बत से बेटियों के फ़ज़ाइल पर मब्नी 8 फ़रामीने मुस्तफ़ा

﴾1﴿ **बेटियों** को बुरा मत समझो, बेशक वोह मह़ब्बत करने वालियां हैं ।[1] ﴾2﴿ जिस के यहां **बेटी** पैदा हो और वोह उसे ईज़ा न दे और न ही बुरा जाने और न बेटे को **बेटी** पर फ़ज़ीलत दे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस शख़्स को **जन्नत** में दाख़िल फ़रमाएगा ।[2] ﴾3﴿ जिस शख़्स पर **बेटियों** की परवरिश का बोझ आ पड़े और वोह उन के साथ हुस्ने सुलूक (या'नी अच्छा बरताव) करे तो येह **बेटियां** उस के लिये जहन्नम से रोक बन जाएंगी ।[3] ﴾4﴿ जब किसी के हां **लड़की** पैदा होती है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़िरिश्तों को भेजता है जो आ कर कहते हैं : "اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ اَهْلَ الْبَيْت या'नी ऐ घर वालो ! तुम पर सलामती हो।" फिर फ़िरिश्ते उस **बच्ची** को अपने परों के साए में ले लेते हैं और उस के सर पर हाथ फैरते हुए कहते हैं कि येह एक कमज़ोर जान है जो एक ना तुवां (या'नी कमज़ोर) से पैदा हुई है, जो शख़्स इस ना तुवां जान की परवरिश की ज़िम्मेदारी लेगा, क़ियामत तक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मदद उस के शामिले ह़ाल रहेगी ।[4] ﴾5﴿ जिस की **तीन बेटियां** हों, वोह उन के साथ अच्छा सुलूक करे

مدینہ

۱ مُسندِ اِمام احمد بن حنبل ج٦ ص١٣٤ حديث١٧٣٧٨ ۲ المستدرك ج ٥ ص ٢٤٨ حديث ٧٤٢٨ ۳ مسلم ص ١٤١٤ حديث ٢٦٢٩ ٤ مجمع الزوائد ج٨ ص٢٨٥ حديث١٣٤٨٤

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा। (جمع الجوامع)

तो उस के लिये **जन्नत** वाजिब हो जाती है। अ़र्ज़ की गई : और **दो** हों तो ? फ़रमाया : और दो हों तब भी। अ़र्ज़ की गई : अगर एक हो तो ? फ़रमाया : अगर एक हो तो भी।[1] ﴾6﴿ जिस की तीन **बेटियां** या तीन **बहनें** हों या दो बेटियां या दो बहनें हों फिर वोह उन की अच्छी त़रह़ परवरिश करे और उन के मुआ़-मले में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरता रहे तो उस के लिये **जन्नत** है।[2] ﴾7﴿ जिस की तीन **बेटियां** या तीन **बहनें** हों और वोह उन के साथ अच्छा सुलूक करे तो वोह **जन्नत** में दाख़िल होगा।[3] ﴾8﴿ जिस ने अपनी दो **बेटियों** या दो **बहनों** या दो **रिश्तेदार बच्चियों** पर सवाब की निय्यत से ख़र्च किया यहां तक कि **अल्लाह तआ़ला** उन्हें बे नियाज़ कर दे (या'नी उन का निकाह़ हो जाए या वोह साह़िबे माल हो जाएं या उन की वफ़ात हो जाए) तो वोह उस के लिये आग से आड़ हो जाएंगी।[4]

बेटी पर माहे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शफ्क़त

ह़ज़रते सय्यि-दतुना बीबी फ़ाति़मा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا जब मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते सरापा शफ्क़त में ह़ाज़िर होतीं तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم खड़े हो कर उन की त़रफ़ मु-तवज्जेह हो जाते, फिर अपने प्यारे प्यारे हाथ में उन का हाथ ले कर उसे बोसा देते फिर उन को अपने बैठने की जगह पर बिठाते। इसी त़रह़ जब आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सय्यि-दतुना बीबी **फ़ाति़मा** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا के हां तशरीफ़ ले जाते तो वोह देख कर खड़ी हो जातीं, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मुबारक हाथ अपने हाथ में ले कर चूमतीं और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अपनी जगह पर बिठातीं। (ابوداؤد ج٤ ص٤٥٤ حدیث ٥٢١٧)

مدینہ

۱ معجم الاوسط ج٤ص٣٤٧حدیث ٦١٩٩مُلَخَّصاً ۲ ترمذی ج ٣ ص ٣٦٧ حدیث ١٩٢٣ ۳ ترمذی ج ٣ ص ٣٦٦ حدیث١٩١٩ ٤ مسند امام احمد بن حنبل ج١٠ ص ١٧٩ حدیث ٢٦٥٧٨

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تعالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया। (طبرانی)

बड़ी शहज़ादी को ज़ालिम ने नेज़ा मार कर......

हज़रते सय्यि-दतुना ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सब से बड़ी शहज़ादी हैं जो कि ए'लाने नुबुव्वत से दस साल क़ब्ल **मक्कतुल मुकर्रमा** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّتَعْظِیْمًا में पैदा हुईं। जंगे बद्र के बा'द हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन को **मक्कए मुकर्रमा** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّتَعْظِیْمًا से मदीनए मुनव्वरह زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّتَعْظِیْمًا बुला लिया। जब येह हिजरत के इरादे से ऊंट पर सुवार हो कर मक्कए मुकर्रमा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّتَعْظِیْمًا से बाहर निकलीं तो काफ़िरों ने इन का रास्ता रोक लिया, एक ज़ालिम ने नेज़ा मार कर इन को ऊंट से ज़मीन पर गिरा दिया जिस की वज्ह से इन का ह़म्ल साक़ित़ हो गया (या'नी बच्चा उसी वक़्त पेट में ही फ़ौत हो गया)। नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम عَلَیْہِ اَفْضَلُ الصَّلٰوۃِ وَالتَّسْلِیْم को इस वाक़िए से बहुत सदमा हुवा। चुनान्चे आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन के फ़ज़ाइल में इर्शाद फ़रमाया : **هِیَ اَفْضَلُ بَنَاتِیْ اُصِیْبَتْ فِیَّ** या'नी "येह मेरी बेटियों में इस ए'तिबार से अफ़्ज़ल है कि मेरी त़रफ़ हिजरत करने में इतनी बड़ी मुसीबत उठाई।" जब 8 हिजरी में ह़ज़रते सय्यि-दतुना **ज़ैनब** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का इन्तिक़ाल हो गया तो सुल्त़ाने मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने नमाज़े जनाज़ा पढ़ा कर खु़द अपने मुबारक हाथों से इन्हें क़ब्र में उतारा। **(شَرْحُ الزُّرْقانی عَلَی الْمَواھِب ج٤ ص٣١٨ ماخوذاً)**

नवासी को अंगूठी अ़त़ा फ़रमाई

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : नज्जाशी बादशाह ने सरवरे काएनात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते बा ब-र-कत में कुछ ज़ेवरात की सौग़ात भेजी जिन में एक **ह़बशी नगीने वाली अंगूठी** भी थी। **अल्लाह**

www.dawateislami.net

के प्यारे नबी, मक्की म–दनी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस अंगूठी को छड़ी या मुबारक उंगली से मस किया (या'नी छुवा) और अपनी बड़ी शहज़ादी सय्यि–दतुना ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की प्यारी बेटी या'नी अपनी नवासी **उमामा** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को बुलाया और फ़रमाया : "ऐ छोटी बच्ची ! इसे तुम पहन लो।" (ابوداؤد ج ٤ ص ١٢٥ حديث ٤٢٣٥)

नवासी अपने नानाजान के मुबारक कन्धे पर

"**बुख़ारी** शरीफ़" में है : ह़ज़रते सय्यिदुना अबू क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हमारे पास तशरीफ़ लाए तो आप (अपनी नवासी) **उमामा** बिन्ते अबुल आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को अपने मुबारक कन्धे पर उठाए हुए थे। फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم नमाज़ पढ़ाने लगे तो रुकूअ़ में जाते वक़्त उन्हें उतार देते और जब खड़े होते तो उन्हें उठा लेते। (بُخاری ج٤ص١٠٠حديث٥٩٩٦)

ह़दीसे पाक के नमाज़ वाले ह़िस्से की शर्ह़

शारेह़े बुख़ारी मुफ़्ती शरीफ़ुल ह़क़ अमजदी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ القَوِی इस ह़दीसे पाक के तह़्त लिखते हैं : छोटे बच्चे को गोद में ले कर नमाज़ पढ़ने के बारे में (बा'ज़ लोगों का) येही ख़याल है कि नमाज़ नहीं होगी, इस वाहिमे (या'नी गुमान, ख़याल) को ख़त्म करने के लिये **इमाम बुख़ारी** (عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ البَارِی) ने येह बाब बांधा और येह ह़दीस ज़िक्र फ़रमाई। अगर छोटे बच्चे का जिस्म और कपड़े पाक हों और उतारने और गोद में लेने में "**अ़–मले कसीर**" न होता हो तो छोटे बच्चे को गोद में ले कर नमाज़ पढ़ने में कोई ह़रज नहीं। (नुज़्हतुल क़ारी, जि. 2, स. 198) "तफ़्हीमुल बुख़ारी" में इस ह़दीसे पाक के तह़्त है : सय्यिदे आ़लम

www.dawateislami.net

صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बयाने जवाज़ के लिये इस त़रह़ किया था, येह आप (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के लिये मक्रूह न था (बल्कि **आप** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **के ह़क़ में बाइसे सवाब** था)।

(तफ़्हीमुल बुख़ारी, जि. 1, स. 864)

''अ़-मले कसीर'' की ता'रीफ़

ऊपर दी हुई शर्ह़ में **अ़-मले कसीर** का तज़्किरा है, इस ज़िम्न में अ़र्ज़ है कि **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 496 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, ''**नमाज़ के अह़काम**'' सफ़ह़ा 242 ता 243 पर है : ''अ़-मले कसीर'' नमाज़ को फ़ासिद कर देता है जब कि न नमाज़ के आ'माल से हो न ही इस्लाह़े नमाज़ के लिये किया गया हो। जिस काम के करने वाले को दूर से देखने से ऐसा लगे कि येह नमाज़ में नहीं है बल्कि अगर गुमान भी ग़ालिब हो कि नमाज़ में नहीं तब भी **अ़-मले कसीर** है और अगर दूर से देखने वाले को शको शुबा है कि नमाज़ में है या नहीं तो **अ़-मले क़लील** है और नमाज़ फ़ासिद न होगी। (دُرِّمُختار ج۲ص٤٦٤)

गोद में बच्चा ले कर नमाज़ पढ़ने का मस्अला

बहारे शरीअ़त जिल्द 1 सफ़ह़ा 476 पर है : अगर गोद में इतना छोटा बच्चा ले कर नमाज़ पढ़ी कि ख़ुद इस की गोद में (बच्चा) अपनी सकत (या'नी त़ाक़त) से न रुक सके बल्कि इस (या'नी नमाज़ी) के रोकने से थमा हुवा हो और उस का बदन या कपड़ा ब क़दरे मानेए़ नमाज़ नापाक है, तो नमाज़ न होगी कि येही उसे उठाए हुए है और अगर वोह अपनी सकत (या'नी त़ाक़त) से रुका हुवा है, इस (या'नी नमाज़ पढ़ने वाले के रोकने का मोह़ताज नहीं तो नमाज़ हो जाएगी कि अब येह उसे उठाए हुए

www.dawateislami.net

नहीं फिर भी बे ज़रूरत कराहत से ख़ाली नहीं अगर्चे उस के बदन और कपड़ों पर नजासत भी न हो।)

मिस्कीन मां का बेटियों पर ईसार (ह़िकायत)

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं **:** मेरे पास एक मिस्कीन औ़रत आई जिस के साथ उस की **दो बेटियां** भी थीं, मैं ने उसे **तीन खजूरें** दीं। उस ने हर एक को एक एक खजूर दी, फिर जिस खजूर को वोह ख़ुद खाना चाहती थी उस के दो टुकड़े कर के वोह खजूर भी उन (या'नी दोनों बेटियों) को खिला दी। मुझे इस वाक़िए से बहुत तअ़ज्जुब हुवा, मैं ने नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में उस ख़ातून के ईसार का बयान किया तो सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया **:** ''**अल्लाह तआ़ला** ने इस (ईसार) की वज्ह से उस औ़रत के लिये जन्नत वाजिब कर दी।'' **(مسلم حدیث۲٦۳۰ ص۱٤۱۰)**

ईसार का सवाब

مَاشَآءَاللہ ! ''ईसार'' की भी क्या बात है ! काश ! हम भी अपनी पसन्द की चीज़ें ईसार करना सीख जाते ! तरग़ीब व तह़रीस के लिये येह ह़दीसे पाक सुनिये **: फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **: जो शख़्स किसी चीज़ की ख़्वाहिश रखता हो, फिर उस ख़्वाहिश को रोक कर अपने ऊपर किसी और को तरजीह़ दे, तो अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **उसे बख़्श देता है।** **(اِحیاءُ العُلوم ج ۳ص۱۱٤)**

देने में बेटियों से पहल करने की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि रसूले अकरम, शहन्शाहे आदम व बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

www.dawateislami.net

का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है **:** ''जो बाज़ार से अपने बच्चों के लिये कोई नई चीज़ लाए तो वोह उन (या'नी बच्चों) पर स–दक़ा करने वाले की त़रह़ है और उसे चाहिये कि **बेटियों** से इब्तिदा करे क्यूं कि **अल्लाह तआ़ला बेटियों** पर रह़्म फ़रमाता है और जो शख़्स अपनी **बेटियों** पर रह़मत व शफ़्क़त करे वोह ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में रोने वाले की मिस्ल है और जो अपनी **बेटियों** को ख़ुश करे **अल्लाह तआ़ला** बरोज़े क़ियामत उसे ख़ुश करेगा।''

(اَلْفِردَوس ج۲ص۲٦۳ حدیث۵۸۳۰)

अल्ट्रा साउन्ड का अहम मस्अला

सद करोड़ अफ़्सोस ! आज कल मुसल्मानों की एक ता'दाद ''बेटी'' की पैदाइश को ना पसन्द करने लगी है ! और बा'ज़ मां बाप पेट में बच्चा है या बच्ची इस की मा'लूमात के लिये अल्ट्रा साउन्ड भी करवा डालते हैं ! फिर रिपोर्ट में बेटी की निशान देही की सूरत में बा'ज़ तो (مَعَاذَالله) ह़म्ल ज़ाएअ़ करवाने से भी दरेग़ नहीं करते। अल्ट्रा साउन्ड करवाने का अहम मस्अला ज़ेह्न नशीन फ़रमा लीजिये **:** अगर मरज़ का इ़लाज मक़्सूद है तो उस की तश्ख़ीस (या'नी पहचान) के लिये बे पर्दगी हो रही हो तब भी माहिर त़बीब के कहने पर औ़रत किसी मुसल्मान औ़रत (और न मिले तो मजबूरी की सूरत में मर्द वग़ैरा) के ज़रीए़ अल्ट्रा साउन्ड करवा सकती है। लेकिन बच्चा है या बच्ची इस की मा'लूमात ह़ासिल करने का तअ़ल्लुक़ चूंकि इ़लाज से नहीं और अल्ट्रा साउन्ड में औ़रत के सत्र (या'नी इन आ'ज़ा म–सलन नाफ़ के नीचे के ह़िस्से) की बे पर्दगी होती है लिहाज़ा येह काम मर्द तो मर्द किसी मुसल्मान औ़रत से भी करवाना ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है।

www.dawateislami.net

अल्ट्रा साउन्ड की ग़लत़ रिपोर्ट ने घर उजाड़ दिया (दर्दनाक ह़िकायत)

तमाम साइन्सी तह़क़ीक़ात चूंकि यक़ीनी नहीं होतीं लिहाज़ा बेटा या बेटी का मुआ़-मला हो या किसी और बीमारी का, अल्ट्रा साउन्ड की रिपोर्ट दुरुस्त ही हो येह ज़रूरी नहीं। दा'वते इस्लामी के **म-दनी चेनल** के हफ़्तावार मक़्बूल सिल्सिले "ऐसा क्यूं होता है ?" की क़िस्त़ 14 "ज़ुल्म की इन्तिहा" में एक पाकिस्तानी लेबोरेट्रियन ने अपने तजरिबात बयान करते हुए कुछ इस त़रह़ बताया कि "एक औ़रत के इब्तिदाई अय्याम के अल्ट्रा साउन्ड की रिपोर्ट में साथ आने वाले शोहर ने जब बेटी का सुना तो सुनते ही बेचारी को **त़लाक़** दे दी ! लेकिन **जब दिन पूरे हुए और विलादत हुई तो बेटा पैदा हो गया !**" मगर आह ! अल्ट्रा साउन्ड की रिपोर्ट पर अन्धा यक़ीन रखने वाले आदमी की नादानी के सबब उस दुख्यारी बीबी का घर उजड़ चुका था !

बेटे की रिपोर्ट के बा वुजूद बेटी पैदा हुई (ह़िकायत)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! अल्ट्रा साउन्ड की रिपोर्ट ह़त्मी (FINAL) नहीं होती, इस ज़िम्न में एक और "ह़िकायत" समाअ़त कीजिये चुनान्चे एक मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी के बयान का लुब्बे लुबाब है कि मेरे एक क्लास फ़ेलो फ़ौजी अफ़्सर हैं, 2006 ई. या 2007 ई. में अल्ट्रा साउन्ड की रिपोर्ट के मुत़ाबिक़ उन की ज़ौजा एक बेटे की मां बनने वाली थीं। उस रिपोर्ट की बुन्याद पर मेरे दोस्त की वालिदा (या'नी होने वाले बच्चे की दादी) ने बड़े चाव (या'नी अरमानों) के साथ पोते के (मर्दाना) कपड़े तय्यार किये, मगर जब विलादत हुई तो **बेटी** पैदा हुई, अब तो दादी के अरमानों पर ओस पड़ गई, उस की जो नाक कटी

(या'नी बे इ़ज़्ज़ती हुई तो) उस ने अपना सारा ग़ुस्सा बेटी जनने वाली बहू को बातें सुना सुना कर उतारा । (مَعَاذَاللہ बहू ने गोया अपने इख़्तियार से बेटी जनी थी !)

बेटी की 2 रिपोर्टों के बा वुजूद बेटा पैदा हुवा

दा'वते इस्लामी के आ़लमी म-दनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना (बाबुल मदीना कराची) में वाक़ेआ़ जामिअ़तुल मदीना के एक मुदर्रिस का बयान है : 2013 ई. की बात है, मेरे घर एक और बच्चे की आमद मु-तवक़्क़अ़ थी, اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ एक बेटा और **तीन बेटियां** पहले से मौजूद थीं । तिब्बी ज़रूरिय्यात की बिना पर मुख़्तलिफ़ महीनों में तीन अल्ट्रा साउन्ड हुए, पहला अल्ट्रा साउन्ड करने वाली ने बेटे की ख़बर दी जब कि मज़ीद दो अल्ट्रा साउन्ड एक तजरिबा कार लेडी डॉक्टर ने किये और उस ने दोनों मर्तबा बेटी की नवीद (ख़ुश ख़बरी) सुनाई । اَلْحَمْدُ لِلّٰہ दा'वते इस्लामी के **म-दनी माह़ोल** की ब-र-कत से मेरा ज़ेह्न बना हुवा था कि येह मुआ़-मलात ज़न्नी होते हैं यक़ीनी नहीं और सच्ची बात येह है कि इस मर्तबा मुझे **बेटे** की ख़्वाहिश थी (जिस के लिये मैं आ़लिम व मुफ़्ती और दा'वते इस्लामी का मुबल्लिग़ बनाने जैसी मुख़्तलिफ़ निय्यतें भी कर चुका था) इस लिये मैं ने अपने परवर दगार عَزَّوَجَلَّ से येह दुआ़ करना नहीं छोड़ी कि **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें ऐसा बेटा अ़त़ा फ़रमा जो दुन्या व आख़िरत में हमारे ह़क़ में बेहतर हो, लेकिन बेटी की पैदाइश की सूरत में भी मैं अपने रब عَزَّوَجَلَّ का शुक्र ही अदा करता क्यूं कि जब से मैं ने अपने प्यारे प्यारे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का येह फ़रमाने आ़लीशान पढ़ा था कि : "**बेटियों** को बुरा मत समझो, बेशक वोह

महब्बत करने वालियां हैं।[1]'' अपनी बेटियों से मेरी महब्बत और बढ़ चुकी थी। बहर हाल 16 सितम्बर 2013 ई. को जब विलादत हुई तो अल्ट्रा साउन्ड की दो रिपोर्टों के बर अक्स (या'नी उलट) **चांद सा म-दनी मुन्ना** तशरीफ़ ले आया, اَلحمدللّٰہِ عَلٰی ذٰلِک (या'नी इस पर **अल्लाह तआ़ला** का शुक्र है)।

अच्छी निय्यत से बेटे की ख़्वाहिश

याद रहे! बेटियों से नफ़रत न रखने और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा पर राज़ी रहने वाले मुसल्मान का **बेटे** की विलादत की ख़्वाहिश करना और इस के लिये दुआ़एं मांगना नीज़ अवराद व ता'वीज़ात वग़ैरा का इस्ति'माल करना बिला शुबा जाइज़ बल्कि ह़ाफ़िज़, क़ारी, आ़लिम, मुफ़्ती और दा'वते इस्लामी का मुबल्लिग़ वग़ैरा बनाने जैसी अच्छी अच्छी निय्यतें हों तो कारे सवाब भी है। (येह निय्यतें बेटी के लिये भी की जा सकती हैं) दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबिय्यत के **म-दनी क़ाफ़िले** में आ़शिक़ाने रसूल के हमराह सुन्नतों भरा सफ़र कर के दुआ़एं करने वालों की भी बसा अवक़ात ह़स्रतें पूरी हो जाती हैं चुनान्चे औलादे नरीना से गोद हरी होने की **म-दनी बहार** मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये :

म-दनी मुन्ने की आमद

क़स्बा कॉलोनी (बाबुल मदीना कराची) के एक इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलासा है : हमारे ख़ानदान में लड़कियां काफ़ी थीं, चचाजान के यहां सात लड़कियां तो बड़े भाईजान के यहां 9 लड़कियां! मेरी शादी हुई तो मेरे यहां भी लड़की की विलादत हुई। बा'ज़ ख़ानदान वालों को आज कल के एक आ़म ज़ेह्न के मुताबिक़ वह्म सा होने लगा कि किसी

[1] مُسندِ اِمام احمد بن حنبل ج٦ص١٣٤حديث١٧٣٧٨

www.dawateislami.net

ने जादू कर के औलादे नरीना का सिल्सिला बन्द करवा दिया है ! मैं ने निय्यत की, कि मेरे यहां लड़का पैदा हुवा तो **एक माह के म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र करूंगा । मेरी म-दनी मुन्नी की अम्मी ने एक बार ख़्वाब देखा कि आस्मान से कोई काग़ज़ का पुर्ज़ा उन के क़रीब आ कर गिरा, उठा कर देखा तो उस पर लिखा था : **"बिलाल ।"** اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ एक माह के म-दनी क़ाफ़िले की (निय्यत की) ब-र-कत से मेरे यहां **म-दनी मुन्ने** की आमद हो गई ! न सिर्फ़ एक बल्कि आगे चल कर यके बा'द दीगरे **दो म-दनी मुन्ने** मज़ीद पैदा हुए । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का करम देखिये ! मेरे हुस्ने ज़न में **एक माह के म-दनी क़ाफ़िले** की ब-र-कत सिर्फ़ मुझ तक महदूद न रही, हमारे ख़ानदान में जो भी औलादे नरीना से महरूम था सब के यहां ख़ुशियों की बहारें लुटाते हुए **म-दनी मुन्ने** तवल्लुद (या'नी पैदा) हुए । येह बयान देते वक़्त اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं अ़लाक़ाई म-दनी क़ाफ़िला ज़िम्मेदार की हैसिय्यत से म-दनी क़ाफ़िलों की बहारें लुटाने की कोशिशें कर रहा हूं ।

आ के तुम बा अदब, देख लो फ़ज़्ले रब — म-दनी मुन्ने मिलें, क़ाफ़िले में चलो
खोटी क़िस्मत खरी, गोद होगी हरी — पूरी हों ह़सरतें, क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मुंह मांगी मुराद न मिलना भी इन्आ़म !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! **म-दनी क़ाफ़िले** की ब-र-कत से किस त़रह़ मन की मुरादें बर आतीं, उम्मीदों की सूखी खेतियां हरी हो जातीं और दिलों की पज़मुर्दा कलियां खिल उठती हैं ! मगर येह ज़ेह्न में रहे कि हर एक की दिली मुराद पूरी ही हो येह ज़रूरी

नहीं, बारहा ऐसा होता है कि बन्दा जो त़लब करता है वोह उस के ह़क़ में बेहतर नहीं होता इस लिये उस का सुवाल पूरा नहीं किया जाता, ऐसी सूरत में उस की मुंह मांगी मुराद न मिलना यक़ीनन उस के लिये इन्आ़म है। म-सलन येही कि वोह **औलादे नरीना** मांगता है मगर उस को म-दनी मुन्नियों से नवाज़ा जाता है और येही उस के ह़क़ में बेहतर भी होता है, क्यूं कि मिसाल के त़ौर पर अगर बेटा पैदा होता तो नाबीना या हाथ पाउं से मा'ज़ूर या सदा बीमार रहने वाला होता, या तन्दुरुस्त होता भी तो बड़ा हो कर हेरोइन्ची, चोर, डाकू या मां बाप पर ज़ुल्म करने वाला होता। पारह 2 **सू-रतुल ब-क़रह** की आयत नम्बर 216 में रब्बुल इ़बाद عَزَّوَجَلَّ का इर्शादे ह़क़ीक़त बुन्याद है :

وَعَسٰۤى اَنْ تُحِبُّوْا شَیْـًٔا وَّهُوَ شَرٌّ لَّكُمْ ؕ

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और क़रीब है कि कोई बात तुम्हें पसन्द आए और वोह तुम्हारे ह़क़ में बुरी हो।

''یَاشَافِیَ الْاَمْرَاض!'' के तेरह ह़ुरूफ़ की निस्बत से ता'वीज़ात के बारे में 13 म-दनी फूल

❁ क़ुरआनी आयत पढ़ने के लिये हैज़ो निफ़ास व जनाबत से पाक होना ज़रूरी है और आयत का ता'वीज़ लिखने में भी पाकी की ह़ालत का इल्तिज़ाम करे (या'नी लाज़िमी त़ौर पर ख़याल रखे)। जिन पर ग़ुस्ल फ़र्ज़ नहीं वोह बे वुज़ू बिग़ैर छूए देख कर या ज़बानी आयत पढ़ सकते हैं मगर बे वुज़ू आयत का ता'वीज़ लिखना उन के लिये भी जाइज़ नहीं। इसी त़रह़ इन सब को ऐसा ता'वीज़ छूना या ऐसी अंगूठी छूना या पहनना जैसे मुक़त्त़आ़त की अंगूठी ह़राम है ❁ अगर आयत का ता'वीज़ कपड़े,

www.dawateislami.net

रेगज़ीन या चमड़े वग़ैरा में सिला हुवा हो तो बे ग़ुस्लों और बे वुज़ू सब के लिये इस का छूना, पहनना जाइज़ है ❁ ता'वीज़ हमेशा इस त़रह़ लिखिये कि हर दाएरे वाले ह़र्फ़ की गोलाई खुली रहे, या'नी इस त़रह़ : ط،ظ،ہ،ھ،ص،ض،و،م،ف،ق वग़ैरा ❁ आयात वग़ैरा में ए'राब (या'नी ज़ेर, ज़बर, पेश वग़ैरा) लगाना ज़रूरी नहीं ❁ पहनने का ता'वीज़ हमेशा वॉटर प्रूफ़ इंक म-सलन बॉल पोइन्ट से लिखिये ❁ ता'वीज़ लपेटने से पहले पढ़िये : بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّدٍ نُوْرٌ مِّنْ نُّوْرِ اللّٰه ❁ आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ता'वीज़ लपेटने में सीधी त़रफ़ से पहल फ़रमाते थे ❁ पहनने वालों को चाहिये कि पसीने और पानी वग़ैरा के असर से बचाने के लिये ता'वीज़ को मोमजामा कर लें (या'नी मोम में तर किये हुए कपड़े का टुकड़ा लपेट लें) या प्लास्टिक कोटिंग कर लें फिर कपड़े, रेगज़ीन या चमड़े वग़ैरा में सी लें ❁ **सोने**, चांदी या किसी भी धात (METAL) की डिबिया में ता'वीज़ पहनना मर्द को जाइज़ नहीं ❁ इसी त़रह़ धात की ज़न्जीर (METAL-CHAIN) पहनना ख़्वाह उस में ता'वीज़ हो या न हो मर्द के लिये गुनाह है ❁ सोने, चांदी और स्टील वग़ैरा किसी भी धात (METAL) की तख़्ती या कड़ा जिस पर कुछ लिखा हो, या न लिखा हो, या चाहे **अल्लाह** का मुबारक नाम या **कलिमए त़य्यिबा** वग़ैरा खुदाई किया हुवा हो उस का पहनना मर्द के लिये ना जाइज़ है ❁ **औ़रत** सोने चांदी की डिबिया में ता'वीज़ पहन सकती है ❁ जिस बरतन, पियाले या प्लेट वग़ैरा पर क़ुरआनी आयत लिखी हो उस का इस्ति'माल मक्रूह है अलबत्ता ब निय्यते शिफ़ा उस में पानी वग़ैरा पी सकते हैं लेकिन बे वुज़ू या बे ग़ुस्ले और ह़ैज़ो निफ़ास वाली

औ़रत को आयत वाला बरतन छूना ह़राम है। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 327 मुलख़्ख़सन) **आयत वाले** बरतन का पानी किसी ना बालिग़ बच्चे वग़ैरा ने किसी और बरतन में निकाल कर दिया तो हर त़रह़ के मरीज़ व ग़ैरे मरीज़ सभी पी सकते हैं।

''या रब ! ब तुफ़ैले मुस्त़फ़ा मुझे हर ह़ाल में अपना शुक्र गुज़ार रख''

के चालीस ह़ुरूफ़ की निस्बत से 40 रूह़ानी इ़लाज

बे औ़लादी के 4 रूह़ानी इ़लाज

(हर विर्द के अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ना है)

﴿1﴾ हर नमाज़ के बा'द 300 बार بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ पढ़ने का मा'मूल बना लीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ साह़िबे औ़लाद हो जाएंगे। (इस्लामी बहन और इस्लामी भाई दोनों पढ़ सकते हैं) ﴿2﴾ मियां बीवी दोनों 56 बार لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه बीच रात में पढ़ कर ''मिलाप'' करें तो **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** की रह़मत से नेक औ़लाद की विलादत हो जो कि अपने मां बाप के लिये सामाने राह़त बने ﴿3﴾ يَا اَوَّلُ 41 बार रोज़ाना पढ़िये, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ साह़िबे औ़लाद हो जाएंगे। (मुद्दत : 40 दिन) ﴿4﴾ 40 लोंग ले कर हर एक पर **सू-रतुन्नूर** की आयत नम्बर 40 सात बार पढ़ कर दम कीजिये (कोई भी पढ़ सकता है) जिस दिन औ़रत ह़ैज़ से पाक हो, ग़ुस्ल कर के उसी दिन से रोज़ाना सोते वक़्त एक लोंग खाना शुरूअ़ करे और इस पर पानी न पिये, इन 40 दिनों में शोहर के साथ कम अज़ कम एक बार ज़रूर ''मिलाप'' कर ले (ज़ियादा बार में भी ह़रज नहीं), اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ औ़लाद नसीब होगी।

www.dawateislami.net

''या ख़ुदा करम कर'' के दस हुरूफ़ की निस्बत से औलादे नरीना के 10 रूहानी इलाज

(हर विर्द के अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ना है)

﴾5﴿ يَامُتَكَبِّرُ 10 बार, ज़ौजा से ''मिलाप'' से क़ब्ल पढ़ लेने वाला اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **नेक बेटे** का बाप बनेगा ﴾6﴿ **हामिला** शहादत की उंगली अपनी नाफ़ के गिर्द घुमाते हुए يَامَتِيْنُ 70 बार पढ़े। येह अ़मल 40 दिन तक जारी रखे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम से **बेटा** इनायत होगा। इस अ़मल में हर मरज़ का इलाज है। कोई सा भी मरीज़ येह अ़मल करे तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ शिफ़ा पाए। (नाफ़ से कपड़ा हटाने की ज़रूरत नहीं, कपड़े के ऊपर ही से येह अ़मल करना है) ﴾7﴿ ह़म्ल शुरूअ़ होने के पहले महीने किसी दिन सिर्फ़ एक बार ज़ौजा की सीधी त़रफ़ की पसली पर 54 बार لَآاِلٰهَ اِلَّا اللّٰه लिख दे तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **बेटे** का बाप बनेगा। (बिग़ैर सियाही (ink) के सिर्फ़ शहादत की उंगली से लिखना है, ए'राब न लगाएं, एक बार लिख कर उसी पर बार बार लिखने में ह़रज नहीं) ﴾8﴿ बे औलाद मर्द 7 नफ़्ल रोज़े रखे और रोज़ाना इफ़्त़ार का वक़्त जब क़रीब हो तो يَامُصَوِّرُ (21 बार) पढ़े और पानी पर दम कर के बीवी को पिला दे (अगर बीवी भी रोज़ादार हो तो चाहे तो उसी पानी से रोज़ा खोले) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** की इनायत से **नेक बेटे** की विलादत होगी। बांझ (या'नी जिसे औलाद न होती हो ऐसी) औ़रत भी चाहे तो येह अ़मल करे और दम कर के उस पानी से इफ़्त़ार कर ले। (चाहें तो दोनों अलग अलग अवक़ात में भी येह अ़मल कर सकते हैं।) ﴾9﴿ **ह़म्ल** ठहरने को 3 माह 20 दिन हो जाएं तो मुसल्सल 40 दिन तक रोज़ाना ह़ामिला येह अ़मल करे : पहले ग्यारह

बार दुरूद शरीफ़ फिर हर बार بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ के साथ 7 बार **यासीन** शरीफ़ पढ़े फिर आख़िर में भी 11 बार दुरूद शरीफ़ पढ़े और पानी पर दम कर के पी ले (दुरुस्त पढ़ सकती हो तो ही येह अ़मल करे, पढ़ने के दौरान बात बिल्कुल न करे), اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **नेक बेटा** इनायत होगा ﴿10﴾ ह़ामिला के पेट पर हाथ रख कर शोहर इस त़रह़ कहे : اِنْ كَانَ ذَكَرًا فَقَدْ سَمَّيْتُهٗ مُحَمَّدًا۔ ''**तरजमा :** अगर लड़का है तो मैं ने इस का नाम **मुह़म्मद** रखा'' (اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ लड़का पैदा होगा। अगर कहते वक़्त अ़-रबी इ़बारत के मा'ना ज़ेह्न में हों तो तरजमे के अल्फ़ाज़ कहने की ज़रूरत नहीं वरना तरजमे के अल्फ़ाज़ भी कह ले) ﴿11﴾ बेटा न होता हो, बे औलाद हो, कच्चा ह़म्ल गिर जाता हो या पैदाइश के बा'द बच्चे फ़ौत हो जाते हों तो कच्चे सूत[1] के सात धागे औ़रत को बिल्कुल सीधी खड़ी कर के या एक दम सीधी लिटा कर उस की पेशानी के बालों से पाउं की उंग्लियों तक नाप लीजिये और सातों धागे मिला कर उन पर ग्यारह बार इस त़रह़ **आ-यतुल कुर्सी** शरीफ़ पढ़िये कि हर बार एक गिरह लगाते जाइये और दम करते जाइये। इस गन्डे को (ह़स्बे ज़रूरत कपड़े की बड़ी पट्टी पर लम्बाई में रख कर सी लीजिये ताकि पेट बड़ा हो जाने की सूरत में भी काम चल सके फिर भी अगर तंग पड़ जाए तो कपड़े की पट्टी में जोड़ लगा सकते हैं) औ़रत की कमर पर बांधिये। जब तक बच्चा पैदा न हो जाए हरगिज़ न खोलिये यहां तक कि ग़ुस्ल के वक़्त भी जुदा मत कीजिये। जब **ह़म्ल** के आसार ज़ाहिर हों तो घर की पकाई हुई सफ़ेद मीठी चीज़ (म-सलन मीठे सफ़ेद चावल) पर सरकारे बग़दाद हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ मुह़म्मद अफ़्ज़ल رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه और

1 : उ़मूमन किरयाने वाले पुड़िया बांधने के लिये येही धागा इस्ति'माल करते हैं।

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जब तुम रसूलों पर दुरूद पढ़ो तो मुझ पर भी पढ़ो, बेशक मैं तमाम जहानों के रब का रसूल हूं। (جمع الجوامع)

सय्यिदुना आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की फ़ातिह़ा दिलाइये और औ़रत दो रक्अ़त नफ़्ल अदा करे फिर खड़े हो कर बग़दाद शरीफ़ की त़रफ़ रुख़[1] कर के इस त़रह़ अ़र्ज़ करे **:** ''**या ग़ौसल आ'ज़म** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ! अगर मेरे हां **लड़का** पैदा हुवा तो आप की ग़ुलामी में दे दूंगी और उस का नाम **ग़ुलाम मुह़्युद्दीन** रखूंगी।'' اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **लड़का** ही पैदा होगा। जब बच्चा पैदा हो तो ग़ुस्ल दे कर कानों में अज़ान के बा'द वोह गन्डा मां की कमर से खोल कर बच्चे के गले में पहना दें (चाहें तो कपड़े की पट्टी उधेड़ कर गांठें लगाया हुवा अस्ल गन्डा भी गले में डाल सकते हैं) और बच्चे की पैदाइश के रोज़ से हर साल ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه की नियाज़ के लिये एक रुपिया अ़ला-ह़दा जम्अ़ करते रहें। जब बच्चा ग्यारह साल का हो जाए तो इन ग्यारह रुपों की शीरीनी या मज़ीद जितनी चाहें रक़म मिला कर ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه की नियाज़ करें और फिर उस गन्डे को मह़फ़ूज़ जगह पर दफ़्न कर दें ﴾**12**﴿ बारी के दिनों से फ़ारिग़ होने के बा'द ह़स्बे तौफ़ीक़ कुछ न कुछ ख़ैरात करे, **सू-रतुत्तौबह** एक बार, अव्वल आख़िर ग्यारह ग्यारह मर्तबा दुरूद शरीफ़ पढ़े, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **बेटा** पैदा होगा ﴾**13**﴿ औ़रत हर नमाज़ के बा'द एक तस्बीह़ या'नी 100 बार येह आयते मुबा-रका **:**

رَبِّ لَا تَذَرْنِیْ فَرْدًا وَّ اَنْتَ خَیْرُ الْوٰرِثِیْنَ ﴿۸۹﴾ (پ۱۷،الانبیاء:۸۹) पढ़े, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

مدینہ

1 **:** पाकिस्तान के मुख़्तलिफ़ शहरों के फ़र्क़ के लिह़ाज़ से पाकिस्तान में बग़दाद शरीफ़ की सम्त मग़रिब से शिमाल की जानिब सात या आठ डिग्री पर है। पाक व हिन्द वाले का'बे की त़रफ़ रुख़ करने के बा'द अगर मा'मूली सा सीधे हाथ को मुड़ जाएं तो बग़दाद शरीफ़ की त़रफ़ मुंह हो जाएगा।

www.dawateislami.net

बेटे की ने'मत मिलेगी ﴾**14**﴿ मियां बीवी दोनों रोज़ाना 101 बार **सू-रतुल कौसर** पढ़ें, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जल्द ही बेटे के मां बाप बन जाएंगे।

विलादत में आसानी के 5 रूहानी इलाज

﴾**15**﴿ दर्दे ज़िह (या'नी बच्चे की विलादत के दर्द) में अगर ज़ियादा तक्लीफ़ हो तो औरत मोहरे नुबुव्वत शरीफ़ का अ़क्स (या'नी फ़ोटो) और ना'ले पाक का नक़्श मुठ्ठी में दाब ले या बाज़ू पर बांध ले, जब तक सत्र ढका हो **या अल्लाहु** का विर्द करती रहे, अगर लैटी हुई हो तो विर्द करने के दौरान पाउं समेटे रहे। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ चन्द मिनट में विलादत हो जाएगी ﴾**16**﴿ يَاحَيُّ يَاقَيُّوْمُ 111 बार (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर दर्दे ज़िह (या'नी बच्चे की विलादत के दर्द) में मुब्तला ख़ातून के पेट और कमर पर दम करने या लिख कर बांधने से रब्बुल इ़ज़्ज़त की इ़नायत से दर्दे ज़िह या'नी ज़चगी के दर्द में राह़त और विलादत में सहूलत ह़ासिल होगी। ﴾**17**﴿ **सू-रतुल इन्शिक़ाक़** की इब्तिदाई पांच आयात (اِذَاالسَّمَآءُانْشَقَّتْ ۙ﴿۱﴾ وَاَذِنَتْ لِرَبِّهَاوَحُقَّتْ ۙ﴿۲﴾ وَاِذَاالْاَرْضُ مُدَّتْ ۙ﴿۳﴾ وَاَلْقَتْ مَافِيْهَاوَتَخَلَّتْ ۙ﴿۴﴾ وَاَذِنَتْ لِرَبِّهَاوَحُقَّتْ ۙ﴿۵﴾) **तीन बार** (अव्वल आख़िर तीन मर्तबा दुरूद शरीफ़) हर बार शुरूअ़ में بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ पढ़ लीजिये फिर पानी पर दम कर के पी लीजिये, वक़्तन फ़ वक़्तन इन आयाते मुबा-रका का विर्द कीजिये। इस्लामी बहन न पढ़ सके तो कोई और पढ़ कर दम कर के पिला सकता है। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ दर्दे ज़िह (या'नी विलादत की तक्लीफ़) में आराम मिलेगा, अगर बच्चा टेढ़ा हुवा तो वोह भी सीधा हो जाएगा। **अल्लाह तआ़ला** ने चाहा तो ऑपरेशन का ख़त़रा भी टल जाएगा। (मुद्दते इ़लाज : ता हुसूले मुराद) ﴾**18**﴿ **ह़ामिला** रोज़ाना

www.dawateislami.net

सूरए मरयम की तिलावत करेगी तो इस की ब-र-कतें اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ख़ुद ही देख लेगी । दर्दे ज़िह में राह़त और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से विलादत में सहूलत होगी ﴿19﴾ **يَاقَوِيُّ** 100 बार पढ़ कर ह़ामिला अपने पेट पर दम करती रहे, **اِنْ شَآءَاللّٰه** عَزَّوَجَلَّ बच्चा सीधा हो जाएगा और ऑपरेशन की ज़रूरत न रहेगी ।

विलादत में आसानी का देसी इलाज : ह़ामिला को नवें महीने के शुरूअ़ में मुनासिब मिक़्दार में गाय के दूध में जो कि ख़ुद निकलवाया हुवा हो बाज़ारी न हो, पांच अ़दद मुनक़्क़े (बीज निकाल कर) और दस क़त़रे बादाम का तेल (ALMOND OIL) डाल कर रोज़ाना शाम को पिलाइये, अगर बदाम का तेल न मिले तो गाय के नीम गर्म दूध में गाय का घी मिला कर पी ले और अगर गाय का दूध न मिले तो भेंस या बकरी का ख़ालिस दूध भी इस्ति'माल किया जा सकता है । इस त़रह़ करने से اِنْ شَآءَاللّٰه क़ब्ज़ नहीं होगी नीज़ घबराहट, जी मतलाने, आ'साबी खिचाव और टांगों के दर्द से भी बचत रहेगी, اِنْ شَآءَاللّٰه बिग़ैर ऑपरेशन के विलादत हो जाएगी । इस इ़लाज से ब्लड प्रेशर बढ़ने का कोई ख़त़रा नहीं बल्कि अगर ह़ामिला को ब्लड प्रेशर हुवा भी तो इस इ़लाज से اِنْ شَآءَاللّٰه फ़ाएदा हो जाएगा ।

कच्चा ह़म्ल गिरने के 4 रूह़ानी इ़लाज

﴿20﴾ ह़म्ल ठहरने के बा'द **يَاحَيُّ يَاحَافِظُ يَامُصَوِّرُ** 1100 बार रोज़ाना 40 दिन तक पढ़े, रोज़ाना एक ही वक़्त और एक ही मक़ाम पर पढ़े तो ज़ियादा बेहतर है । रब्बुल इ़ज़्ज़त की रह़मत से ह़म्ल की ह़िफ़ाज़त होगी ﴿21﴾ **لَآاِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ** 55 बार लिख कर ता'वीज़ बना कर ह़ामिला को पहना दीजिये, रब्बुल इ़ज़्ज़त की रह़मत से ह़म्ल की भी ह़िफ़ाज़त होगी

www.dawateislami.net

और म-दनी मुन्ना या म-दनी मुन्नी भी आफ़ातो बलिय्यात से मह़फ़ूज़ रहेंगे ﴾22﴿ يَااَللّٰهُ 1001 बार लिख कर ता'वीज़ बना कर शुरूए ह़म्ल में 40 रोज़ तक ह़ामिला के बांध दीजिये फिर खोल कर नवें महीने दोबारा पहना दीजिये, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ह़म्ल मह़फ़ूज़ रहेगा और तन्दुरुस्त म-दनी मुन्नी या म-दनी मुन्ना पैदा होगा, अब खोल कर म-दनी मुन्नी या म-दनी मुन्ने को पहना दीजिये ﴾23﴿ يَاحَیُّ يَاقَيُّوْمُ 111 बार बॉल पोइन्ट से काग़ज़ पर लिख कर ह़म्ल ठहरने के बा'द औ़रत अपने पेट पर बांध ले और बच्चे की विलादत तक बांधे रहे, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ सिह़्ह़त मन्द **म-दनी मुन्ना** पैदा होगा। (ह़ामिला न लिख सके तो कोई भी लिख कर दे सकता है)

छाती पर वरम के 2 रूह़ानी इलाज

﴾24﴿ **सू-रतुल इख़्लास, सू-रतुल फ़लक़, सू-रतुन्नास** दस दस बार पानी पर दम कर के पिलाया जाए। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ वरम (या'नी सूजन) से नजात मिल जाएगी।

﴾25﴿ ﴿وَاِذَا مَرِضْتُ فَهُوَ يَشْفِيْنِ ﴿٨٠﴾﴾[1] ﴿قُلْ هُوَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا هُدًى وَّشِفَآءٌ﴾[2] दूध आने की जगह सूज गई हो तो औ़रत येह आयाते मुबा-रका पढ़ कर हाथों पर दम कर के सूजी हुई जगह पर फैरे।

हैज़ की बीमारी के चार रूह़ानी इलाज

﴾26﴿ صُمٌّۢ بُكْمٌ عُمْيٌ فَهُمْ لَا يَرْجِعُوْنَ ﴿١٨﴾ अगर हैज़ का ख़ून ज़ियादा मिक़्दार में आता हो तो येह आयते मुबा-रका लिख कर पेट पर बांधी जाए ﴾27﴿ हैज़ की कमी की बीमारी हो तो रोज़ाना 341 बार येह आयते मुबा-रका पढ़ कर आबे ज़मज़म पर दम कर के ग्यारह रोज़ तक मरीज़

[1] پ١٩، الشعراء:٨٠ [2] پ٢٤، حٰمٓ السجدة:٤٤

को पिलाइये ।

﴾28﴿ हैज़ का ख़ून ज़ियादा आने की सूरत में सात दिन तक रोज़ाना एक बार **सू-रतुद्दहर** पानी पर दम कर के पिलाइये । اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ख़ून आना बन्द हो जाएगा ।

﴾29﴿ **सू-रतुल कौसर** रोज़ाना 313 बार पढ़ कर बारिश के पानी पर दम कर के पिलाना हैज़ ज़ियादा आने की बीमारी में बहुत मुफ़ीद है ।

मां के दूध की कमी दूर करने के 6 रूहानी इलाज

﴾30﴿ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ 11 बार कागज़ या प्लेट पर लिख कर पानी से धो कर उस औरत को पिलाया जाए जिसे छोटे बच्चे को पिलाने के लिये दूध न आता हो या बहुत कम आता हो, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ दूध बढ़ जाएगा, अगर येही पानी हामिला को पिलाएं तो **अल्लाह तआला** के फ़ज़्लो करम से हम्ल महफ़ूज़ रहेगा ।

﴾31﴿ **يَامَتِيْنُ** (ऐ कुव्वत वाले) मां का दूध कम हो तो येह इस्मे पाक लिख कर पिला दीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ दूध बढ़ जाएगा । जिस बच्चे का दूध छुड़ा दिया गया हो उसे कागज़ पर लिख कर पिला दीजिये, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ उसे तस्कीन हासिल होगी ﴾32﴿ **هُوَالْحَيُّ الْقَيُّوْمُ** 300 मर्तबा पढ़ कर दम करना मां के दूध की कमी दूर करने के लिये बहुत मुफ़ीद है ।

﴾33﴿ ﴿وَهِيَ تَجْرِيْ بِهِمْ فِيْ مَوْجٍ كَالْجِبَالِ﴾[1] ﴿فِيْهِمَا عَيْنٰنِ تَجْرِيٰنِ ﴿٥٠﴾﴾[2]
﴿وَاَوْحَيْنَاۤ اِلٰۤى اُمِّ مُوْسٰۤى اَنْ اَرْضِعِيْهِ ۚ فَاِذَا خِفْتِ عَلَيْهِ فَاَلْقِيْهِ فِي الْيَمِّ وَلَا تَخَافِيْ وَلَا
تَحْزَنِيْ ۚ اِنَّا رَآدُّوْهُ اِلَيْكِ وَجَاعِلُوْهُ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٧﴾﴾[3] ﴿فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿١٣﴾﴾[4]

مدینہ

[1] پ۱۲، هود: ۴۲ [2] پ۲۷، الرحمن: ۵۰ [3] پ۲۰، القصص: ۷ [4] پ۲۷، الرحمن: ۱۳

www.dawateislami.net

अगर औ़रत के अन्दर दूध पैदा न होता हो तो येह आयाते मुबा-रका 101 बार पढ़ कर बारिश के पानी पर दम कर के पिलाया जाए या औ़रत ख़ुद ही दम कर के पी ले, اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ ख़ूब दूध पैदा होगा ।

﴾34﴿ ﴿وَ اِذَا مَرِضْتُ فَهُوَ يَشْفِيْنِ ﴾[1] ﴿قُلْ هُوَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا هُدًى وَّ شِفَآءٌ ﴾[2]

दूध कम आता हो तो येह आयाते मुबा-रका इक्कीस बार पढ़ या पढ़वा कर पानी पर दम कर के 21 दिन तक औ़रत पिये और इसी को लिख (या लिखवा) कर अपनी छाती पर बांध ले ।

﴾35﴿ दूध में कमी हो तो येह आयते मुबा-रका ख़मीरी रोटी पर लिख या लिखवा कर औ़रत सात रोज़ तक खाए ।

﴾36﴿ म-दनी मुन्ना दूध पीने लगे

अगर म-दनी मुन्ना या म-दनी मुन्नी दूध न पीते हों तो يَاحَيُّ يَاقَيُّوْمُ 100 बार लिख कर दरिया के पानी में धो कर पिलाइये, اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ दूध पीने लगेंगे और ज़िद भी नहीं करेंगे ।

﴾37﴿ दूध छुड़ाने के लिये

لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللہُ 18 बार लिख कर ता'वीज़ बना कर म-दनी मुन्नी या म-दनी मुन्ने के गले में डाल दीजिये, اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ दूध छोड़ देगा ।

दूध पिलाने का ज़रूरी मस्अला

हिजरी सिन के ह़िसाब से दो साल की उ़म्र तक बच्चे को उस की मां (या कोई सी औ़रत) दूध पिला सकती है, दो साल की उ़म्र के बा'द मां या किसी भी औ़रत का दूध पिलाना गुनाह व ह़राम और जहन्नम में

[1] پ۱۹، الشعراء:۸۰ [2] پ۲۴، حٰمٓ السجدۃ:۴۴

www.dawateislami.net

ले जाने वाला काम है। लेकिन ढाई साल की उ़म्र के अन्दर अगर बच्चा किसी औ़रत का दूध पी ले तो दूध का रिश्ता क़ाइम हो जाएगा।

﴾38﴿ ना फ़रमान के लिये रूहानी इलाज

يَاشَهِيْدُ (ऐ ज़ाहिरो बातिन से वाक़िफ़) : सुब्ह़ (तुलूए़ आफ़्ताब से पहले पहले) ना फ़रमान बच्चे या बच्ची की पेशानी पर हाथ रख कर आस्मान की त़रफ़ मुंह कर के जो **21** बार पढ़े, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ उस का वोह बच्चा या बच्ची नेक बने। (मुद्दत ता हुसूले मुराद)

﴾39﴿ बे अ़मल का रूहानी इलाज

बे अ़मल शख़्स जब **सोया** हुवा हो उस वक़्त तक़रीबन तीन फ़िट (या'नी लगभग एक मीटर) के फ़ासिले से कोई नमाज़ी इस्लामी भाई या इस्लामी बहन एक बार **सू-रतुल इख़्लास** ज़रा ऊंची आवाज़ से पढ़े मगर इतनी एह़तियात़ ज़रूरी है कि उस की आंख न खुल जाए। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ सोया हुवा शख़्स बा अ़मल बनेगा। **बे अ़मल** औ़रत के लिये भी येह अ़मल किया जा सकता है।

﴾40﴿ शोहर को नेक नमाज़ी बनाने का नुस्ख़ा

अगर किसी औ़रत का ख़ावन्द बुरी आ़दतों का शिकार हो और घर में हर वक़्त झगड़ा रहता हो तो हर बार بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ के साथ ग्यारह सो ग्यारह (1111) मर्तबा **सू-रतुल फ़ातिह़ा** पढ़ कर पानी पर दम करे फिर अपने ख़ावन्द को पिलाए। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ शोहर नेक नमाज़ी बन जाएगा। (येह अ़मल इस त़रह़ करना है कि शोहर वग़ैरा को पता न चले वरना

ग़लत़ फ़हमी के सबब फ़साद हो सकता है। चाहें तो कूलर वग़ैरा में दम कर लीजिये और शोहर समेत सभी इस से पानी पियें)

ग़मे मदीना, बक़ीअ़,
मग़्फ़िरत और बे
ह़िसाब जन्नतुल
फ़िरदौस में आक़ा
के पड़ोस का त़ालिब

6 रबीउ़ल आख़िर 1436 सि.हि.
27-01-2015

येह रिसाला पढ़ लेने के बा'द सवाब की निय्यत से किसी को दे दीजिये

مآخذ و مراجع

کتاب	مطبوعہ	کتاب	مطبوعہ
قران مجید		مستدرک	دارالمعرفة بیروت
تفسیر کبیر	داراحیاء التراث العربی بیروت	الفردوس	دارالکتب العلمیة بیروت
خزائن العرفان	مکتبة المدینہ باب المدینہ کراچی	مجمع الزوائد	دارالفکر بیروت
بخاری	دارالکتب العلمیة بیروت	کنز العمال	دارالکتب العلمیة بیروت
مسلم	دار ابن حزم بیروت	درمختار	دارالمعرفة بیروت
ابوداؤد	داراحیاء التراث العربی بیروت	احیاء العلوم	دارصادر بیروت
ترمذی	دارالفکر بیروت	شرح الزرقانی	دارالکتب العلمیة بیروت
مسند امام احمد	دارالفکر بیروت	تفہیم البخاری	تفہیم البخاری پبلیکیشنز سردار آباد فیصل آباد
معجم اوسط	دارالکتب العلمیة بیروت	سیرت مصطفیٰ	مکتبة المدینہ باب المدینہ کراچی
سنن دارمی	دارالکتاب العربی بیروت	☆☆☆☆☆	☆☆☆☆☆

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़े **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर सो रहमतें नाज़िल फ़रमाता है। (طبرانی)

फ़ेहरिस

उ़न्वान	सफ़हा	उ़न्वान	सफ़हा
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	1	अल्ट्रा साउन्ड की ग़लत रिपोर्ट ने घर उजाड़ दिया (दर्दनाक हिकायत)	14
ज़िन्दा बेटी कूंएं में फेंक दी	1		
अब्बू ! क्या आप मुझे क़त्ल करने लगे हैं ?	2	बेटे की रिपोर्ट के बा वुजूद बेटी पैदा हुई (हिकायत)	14
आठ बेटियों को ज़िन्दा दरगोर किया !	3	बेटी की 2 रिपोर्टों के बा वुजूद बेटा पैदा हुवा	15
पांच लरज़ा खैज़ वारिदातें	3	अच्छी निय्यत से बेटे की ख़्वाहिश	16
एक दिन की बच्ची को ज़िन्दा दफ़्न कर दिया	4	म-दनी मुन्ने की आमद	16
ज़िन्दा बच्ची प्रेशर कूकर में डाल कर चूल्हे पर चढ़ा दी और....	4	मुंह मांगी मुराद न मिलना भी इन्आ़म !	17
		ता'वीज़ात के बारे में 13 म-दनी फूल	18
अल्लाह चाहे तो बेटा दे या बेटी या कुछ न दे	5	40 रूहानी इ़लाज	20
बा'ज़ अम्बियाए किराम की औलाद की ता'दाद	6	बे औलादी के 4 रूहानी इ़लाज	21
हुज़ूर की मुक़द्दस औलाद की ता'दाद	6	औलादे नरीना के 10 रूहानी इ़लाज	24
बेटियों के फ़ज़ाइल पर मब्नी 8 फ़रामीने मुस्तफ़ा	7	विलादत में आसानी के 5 रूहानी इ़लाज	25
बेटी पर माहे रिसालत की शफ़्क़त	8	कच्चा ह़म्ल गिरने के 4 रूहानी इ़लाज	25
बड़ी शहज़ादी को ज़ालिम ने नेज़ा मार कर...	9	छाती पर वरम के 2 रूहानी इ़लाज	26
नवासी को अंगूठी अ़ता फ़रमाई	9	हैज़ की बीमारी के चार रूहानी इ़लाज	26
नवासी अपने नानाजान के मुबारक कन्धे पर	10	मां के दूध की कमी दूर करने के 6 रूहानी इ़लाज	27
ह़दीसे पाक के नमाज़ वाले हिस्से की शर्ह़	10	म-दनी मुन्ना दूध पीने लगे	28
"अ़-मले कसीर" की ता'रीफ़	11	दूध छुड़ाने के लिये	28
गोद में बच्चा ले कर नमाज़ पढ़ने का मस्अला	11	दूध पिलाने का ज़रूरी मस्अला	28
मिस्कीन मां का बेटियों पर ईसार (हिकायत)	12	ना फ़रमान के लिये रूहानी इ़लाज	29
ईसार का सवाब	12	बे अ़मल का रूहानी इ़लाज	29
देने में बेटियों से पहल करने की फ़ज़ीलत	12	शोहर को नेक नमाज़ी बनाने का नुस्ख़ा	29
अल्ट्रा साउन्ड का अहम मस्अला	13	मआख़िज़ो मराजेअ़	30

www.dawateislami.net

बेटी के सात हुक़ूक़

मेरे आक़ा आ'ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं :

❁ बेटी के पैदा होने पर ना ख़ुशी न करे बल्कि ने'मते इलाहिय्या जाने ❁ बेटियों से ज़ियादा दिलजूई व ख़ातिर दारी रखे कि इन का दिल बहुत थोड़ा होता है ❁ देने में इन्हें और बेटों को कांटे (या'नी तराज़ू) की तोल बराबर रखे ❁ जो चीज़ दे पहले इन्हें (या'नी बेटियों को) दे कर (फिर) बेटों को दे ❁ नव बरस की उ़म्र से न अपने पास सुलाए न (इस के सगे) भाई वग़ैरा के साथ सोने दे ❁ इस उ़म्र से ख़ास निगह दाश्त (कड़ी देखभाल) शुरूअ़ करे, शादी बरात में जहां गाना नाच हो हरगिज़ न जाने दे ❁ किसी फ़ासिक़ फ़ाजिर ख़ुसूसन बद मज़्हब के निकाह़ में न दे।

(माख़ूज़ अज़ : मश्अ़-तुल इर्शाद, स. 27 ता 28 मक-त-बतुल मदीना)

मुम्बई : 19, 20, मुह़म्मद अ़ली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429
देहली : 421, मटिया महल, उर्दू बाज़ार, जामेअ़ मस्जिद, देहली फ़ोन : 011-23284560
नागपूर : ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, सैफ़ी नगर रोड, मोमिन पुरा, नागपूर : (M) 09373110621
अजमेर शरीफ़ : 19/216 फ़लाहे दारैन मस्जिद, नाला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, अजमेर फ़ोन : 0145-2629385
हैदरआबाद : पानी की टंकी, मुग़ल पुरा, हैदरआबाद फ़ोन : 040-24572786
हुब्ली : A.J. मुद्दोल कोम्पलेक्स, A.J. मुद्दोल रोड, ओल्ड हुब्ली ब्रीज के पास, हुब्ली, कर्नाटक. फ़ोन : 08363244860

मक-त-बतुल मदीना®
दा'वते इस्लामी
फ़ैज़ाने मदीना, ग्री कोनिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापूर, अहमदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया
Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net